अलवर ज़िले में पशुधन एवं डेयरी विकास का अध्ययन

Nikita Gupta[1]* Dr. Suman Singh[2]

[1] Research Scholar, Raj Rishi Bhartrihari Matsya University, Alwar, Rajasthan

[2] Associate Professor, Department of Geography, B.S.R. Govt. Arts College, Alwar, Rajasthan

शोध सारांश – *अलवर की अर्थव्यवस्था मुख्य रूप से कृषि, दुग्ध उत्पादन एवं पशुपालन पर ही निर्भर करती है, तथा कृषि के उपरान्त पशुपालन को ही जीविका का प्रमुख साधन माना जा सकता है। अलवर मुख्यतः एक कृषि व पशुपालन प्रधान जिला है। अलवर ज़िले में बड़ी संख्या में पालतू पशू हैं व अलवर का दुग्ध उत्पादन में अग्रणी स्थान है। अलवर में पशु-सम्पदा का विषेश रूप से आर्थिक महत्व माना गया है। यहाँ जीविकोपार्जन का मुख्य साधन पशुपालन ही है। इससे जिले की शुद्ध घरेलू उत्पत्ति का महत्त्वपूर्ण अंश प्राप्त होता है। अलवर की अर्थव्यवस्था के बारे में यह कहा जाता है कि यह पूर्णत कृषि पर निर्भर करती है तथा कृषि मानसून का जुआ मानी जाती है। इस स्थिति में पशुपालन एवं डेयरी विकास का महत्व और भी अधिक बढ़ जाता है। इस आलेख में अलवर ज़िले में पशुधन एवं डेयरी विकास का अध्ययन किया गया है।*

मुख्य शब्दः- अलवर ज़िले में पशुधन विकास, पशुपालन का महत्व, दुग्ध उत्पादक सहकारी संघ लिमिटेड, डेयरी विकास

---------------------------------X---------------------------------

प्रस्तावना:

शोध अध्ययन के लिए जिला अलवर का चयन किया गया। यह जिला राजस्थान के विकासशील जिलों में से एक है। अलवर, जिले की 76 प्रतिशत जनसंख्या ग्रामों में निवास करती है जो मुख्यतः कृषि, पशुपालन एवं डेयरी उद्योग में सलग्न है। अलवर की अर्थव्यवस्था मुख्य रूप से कृषि, दुग्ध उत्पादन एवं पशुपालन पर ही निर्भर करती है, तथा कृषि के उपरान्त पशुपालन को ही जीविका का प्रमुख साधन माना जा सकता है। अलवर मुख्यतः एक कृषि व पशुपालन प्रधान जिला है। अलवर ज़िले में बड़ी संख्या में पालतू पशू हैं व अलवर का दुग्ध उत्पादन में अग्रणी स्थान है। अलवर में पशु-सम्पदा का विषेश रूप से आर्थिक महत्व माना गया है। स्वतन्त्रता के पश्चात् कृषि, उद्योग, व्यापार, पशुपालन, वनीकरण, शिक्षा, स्वरोजगार, सामाजिक सेवाओं और सामाजिक, आर्थिक जीवन में परिवर्तन हुआ है।

अध्ययन क्षेत्र:

अलवर जिला जो कि राजस्थान के सिंहद्वार के नाम से भी पहचाना जाता है, राजस्थान की राजधानी जयपुर, भारत की राजधानी दिल्ली के मध्य राष्ट्रीय राजमार्ग नं. 8 पर अरावली पर्वतमाला की गोद में बसा हुआ है। राजस्थान राज्य के उत्तर-पूर्व में स्थित अलवर जिला 27 °4’ से 28 °4’ उत्तरी अक्षांश और 76°7’ से 77°13’ पूर्वी देशान्तर तक फैला हुआ है। उत्तर से दक्षिण में करीब 110 किलोमीटर क्षेत्र में फैले इस जिले का क्षेत्रफल (जो राज्य का 2.45 प्रतिशत भाग है) 8382 वर्ग किलोमीटर है। इसके उत्तर में हरियाणा और पूर्व में भरतपुर की सीमाएँ लगती हैं, जबकि पश्चिम में जयपुर और दक्षिण में यह जयपुर-दौसा की सीमाओं को छूता है। राजस्थान के पूर्वी भाग में स्थित यह जिला अपनी सामाजिक, आर्थिक, भाषाई वेश-भूषा, खानपान, कृषि व्यवस्था, नदियों, झीलें, अरावली पर्वत श्रृंखला, खनिज आदि के क्षेत्र में विशिष्ट पहचान रखता है।

शोध अध्ययन का उद्देश्य:

1. अलवर ज़िले में पशुधन विकास का तुलनात्मक अध्ययन किया गया।

2. अलवर ज़िले में डेयरी विकास का विश्लेषण किया गया है।

शोध परिकल्पना:

1. अलवर जिले के पशुपालन एवं डेयरी विकास में क्षेत्रीय विषमताएँ हैं।

2. अलवर के ग्रामीण भागों में आर्थिक विकास पर पशुपालन एवं डेयरी विकास प्रभाव स्पष्ट दिखाई देता है।

शोध पद्धति

प्रस्तुत शोध अध्ययन में प्राथमिक एवं द्विवितीयक स्त्रोतों से प्राप्त समकों का प्रयोग किया जायेगा जिनके आधार पर समस्या का विश्लेषण कर सम्भावित शोध परिणाम निष्कर्ष एवं सुझाव देने का प्रयास किया गया है।

आंकड़ों के स्रोत:

किसी भी प्रकार के अध्ययन के लिए आँकड़ों की आवश्यकता होती है। प्रस्तुत अध्ययन में उपयोग हेतु प्राथमिक एवं द्वितीयक आँकड़ें एकत्रित किये गये हैं। विभिन्न विभागों में अभिलेखित आँकड़ों का एकत्रीकरण जनसांख्यिकी विभाग, अलवर, जिला कलेक्टर कार्यालय, अलवर, पशुपालन विभाग, अलवर एवं सरस सहकारी डेयरी विकास निगम लिमिटेड से किया गया है।

विधि तंत्र:

प्राथमिक व द्वितीयक आंकड़ों का तालिकाओं, मानचित्रों एवं सांख्यिकीय विधियों द्वारा विश्लेषण किया गया है। विश्लेषण के लिए निम्नलिखित सांख्यिकीय सूत्रों का उपयोग किया गया।

अलवर ज़िले में पशुपालन:

अलवर जिले में वर्ष 2007 एवं 2012 की पशुगणना के तुलनात्मक आंकड़े नीचे सारणी में प्रदर्शित किए गए हैं। वर्ष 2012 की प्रगति में कृषि एंव पशुपालन के लिए के लिए उपयुक्त जलवायु होने के कारण जिले मे उत्कृष्ट मुर्रा भैंस जखराना, बकरी, संकर नस्ल की गाय एंव हरियाणा नस्ल की देशी गाय प्रमुखता से पाई जाती है। आंकडो के आधार पर जाहिर होता है कि गाय की तुलना मे भैंस पालन की ओर पशुपालकों का रूझान बढा है। नीचे दी गई तालिका के अध्ययन से स्पष्ट है कि वर्ष 2007 में कुल गो वंश 197960 था जो सन 2012 में बढ़कर 206865 हो गया। यह वृद्धि 8905 गो वंश की थी। इसी प्रकार सन 2007 में भैस वंश की सँख्या 977890 थी जो 2012 में बढ़कर 1060734 हो गई यह वृद्धि 82847 की थी।

पशु गणना का तुलनात्मक विवरण जिला अलवर

क.स.	पशुवंश	18 वी गणना के 2007 अनुसार	19 वी गणना के 2012 अनुसार	अन्तर
1	गोवंश	197960	206865	8905
2	भैसवंश	977890	1060734	82847
3	भेड़वंश	100299	52166	–48133
4	बकरीवंश	715581	379776	–335805
5	अश्ववंश	836	952	116
6	पॅनीवंश	170	0	–170
7	खच्चर	488	592	104
8	खरवंश	1692	1284	–408
9	उष्ट्रवंश	12062	5928	–6134
10	शूकरवंश	13841	15142	1301
11	श्वानवंश	52814	16713	–36101
12	खरहावंश	836	639	–197
13	कुक्कुट	169385	168713	–672
14	बतख एवं टर्की	196	0	–196
15	हाथी	–	155	155

नोट– उक्त सूचना में तहसील थानागाजी के समंक राजस्व विभाग से प्राप्त न होने के कारण सम्मिलित नही है।

पशुपालन की तुलनात्मक भौतिक प्रगति:

नीचे दी गई तालिका 2012 से 2018 तक पशुपालन की तुलनात्मक भौतिक प्रगति को प्रदर्शित किया गया है। इस तालिका में पशु चिकित्सा, वत्स उत्पादन, बधियाकरण, कृत्रिम गर्भधान, टीकाकरण एवं भेड़ विकास कार्यो का तुलनात्मक अध्ययन किया गया है।

तुलनात्मक वार्षिक भौतिक प्रगति पशुपालन विभाग, अलवर

क्र. सं.	कार्यक्रम	2012–2013	2013–14	2014–15	2015–16	2016–17	2017–18
01	कृत्रिम गर्भाधान	156426	140045	287429	273214	291673	295692
02	बधियाकरण (बड़े)	12151	13641	12710	14512	13531	10901
03	वत्स उत्पादन	35755	35504	43049	62890	62264	53503
04	पशु चिकित्सा	503052	798748	1344873	1335962	1239570	1543501
05	टीकाकरण						
	a. H.S.	289448	392994	461066	398443	412280	365153
	b. FMD	96612	133563	297607	397561	1406591	1679377
	c. E.T.V.	261300	290490	320600	390105	297680	316900
	d. S. Pox	27070	30126	39670	51380	77070	64890
	e. ARV	1133	4342	5650	47780	2989	5598
	f. B.Q.	22810	29160	38880	43404	38705	42704
06	भेड़ विकास कार्य						
	अ. दवा पिलाना	397076	381477	367821	601649	579902	710751
	ब. दवा छिड़कना	223946	249729	133126	164511	205143	264589
	स. बधियाकरण (छोटे)	12460	15824	10604	14948	12418	14281
07	पशुपालक गोष्ठी	3535	674	1161	1451	1174	2032
08	शुक्रवितरण इकाई	44	38	55	27	73	–

अलवर में पशुपालन का महत्व:

अलवर में पशुधन का महत्व निम्नलिखित तथ्यों से देखा जा सकता है-

निर्धनता उन्मूलन:

निर्धनता उन्मूलन कार्यक्रम में भी पशु-पालन की महत्ता स्वीकार की गई है। समन्वित ग्रामीण विकास कार्यक्रम में गरीब परिवारों को दुधारु पशु देकर उनकी आमदनी बढ़ाने का प्रयास किया गया था। लेकिन इसके लिए चारे व पानी की उचित व्यवस्था करनी होती है तथा लाभान्वित परिवारों को बिक्री की सुविधाएं भी प्रदान करनी होती हैं।

रोज़गार-सृजन:

पशुपालन में ऊँची आमदनी व रोज़गार की संभावनाएँ निहित हैं। पशुओं की उत्पादकता को बढ़ाकर आमदनी में वृद्धि की जा सकती है। राज्य के शुष्क व अर्द्ध-शुष्क भागों में कुछ परिवार काफ़ी संख्या में पशुपालन करते है और इनका यह कार्य वंश-परम्परागत चलता आया है। इन क्षेत्रों में शुद्ध घरेलू उत्पत्ति का ऊँचा अंश पशुपालन से सृजित होता है। इसलिए मरु अर्थव्यवस्था मूलतः पशु-आधारित है।

परिवहन का साधन:

अलवर में पशुधन में भार वहन करने की अपार क्षमता है। बैल, भैंसे, ऊँट, गधे, खच्चर आदि कृषि व कई परियोजनाओं में बोझा ढोने व भार खींचने का काम करते हैं। राज्य की कुल भार वहन क्षमता का 10 प्रतिशत भाग अलवर के पशु वहन करते है। देश में रेल व ट्रकों द्वारा कुल 30 करोड़ टन माल की ढुलाई होती है, जबकि बैलगाडियों से आज भी 70 करोड़ टन माल ढोया जाता है।

खाद की प्राप्ति

पशुपालन के द्वारा कृषि के लिए खाद की प्राप्ति भी होती है। इस समय जानवरों के गोबर से निर्मित “वर्मी कम्पोस्ट“ खाद्य अत्यधिक प्रचलन में है।

अलवर जिला दुग्ध उत्पादक सहकारी संघ लिमिटेड:

अलवर जिला दुग्ध उत्पादक सहकारी संघ लिमिटेड की स्थापना पशु पालकों के विकास के लिए सहकारिता के सिद्वान्त पर अमूल पद्धति के आधार पर ऑपरेशन फ्लड कार्यक्रम के तहत दिनांक 02/09/1972 को की गई थी, तथा 22.08.1973 से दुग्ध संकलन का कार्य प्रारम्भ किया गया। संघ का मूल उद्देश्य दुग्ध व्यवसाय के बिचोलियों को समाप्त कर पशुपालकों को उचित मूल्य दिलाना तथा इनको शोषण से बचाना है। संघ को केन्द्र व राज्य सरकार के राजस्थान को-ऑपरेटिव डेयरी फैडरेशन लि., जयपुर के माध्यम से समय-समय पर मार्ग निर्देशन एवं सहयोग प्राप्त होता रहता है। अलवर जिले में डेयरी विकास कार्यक्रम की प्रगति को नीचे दी गई तालिका में प्रदर्शन किया गया है।

अलवर संघ में राज्य की विभिन्न योजनाओं के अन्तर्गत कुल 44 बी.एम.सी. 72000 लीटर की कुल क्षमता के लगाये जा चुके है। वर्ष 2017-18 के अन्तर्गत अलवर जिले में 24 नई दुग्ध समितियों का पंजीकरण कराया गया है इस प्रकार कुल 1147 दुग्ध समितियॉ पंजीकृत हो चुकी है।

अलवर जिला दुग्ध उत्पादक सहकारी संघ एवम संघ समितियों का सहकारिता के सिद्धान्त के आधार पर गठन किया गया है। दुग्ध संकलन कर जिले के ग्रामीण दुग्ध उत्पादकों का सामाजिक एवं आर्थिक विकास पशुओं की दुग्ध उत्पादन क्षमता में वृद्धि करना एवं दुग्ध उत्पादन लागत में कमी करना, उपभोक्ताओं को शुद्ध एवम गुणवत्ता युक्त स्वास्थ्यप्रद दुग्ध उपलब्ध कराना है ताकि पशुपालकों एवं गॉवों का समुचित आर्थिक विकास हो सके। वर्ष 2017-18, में 24 नई दुग्ध सहकारी समितियों का पंजीकरण कराया गया है। जिनमें से 15 महिला समितियां पंजीकृत कराई गई है। जिससे महिला समितियों की संख्या बढकर 595 हो गई। बन्द दुग्ध समितियों में से 87 पुनः आरम्भ की गई जो पिछले काफी समय से बन्द थी।

डेयरी विकास कार्यक्रम की प्रगति

क्र. सं.	विवरण	ईकाई	वर्ष 2017–18
1	कार्यशील दुग्ध उत्पादक सहकारी समितियां एवं संकलन केन्द्र	संख्या	1147
2	सदस्यों की संख्या	संख्या	92812
3	दुग्ध संकलन (कुल मात्रा)	लाख(लीटर में)	619.851
4	दुग्ध संकलन (प्रतिदिन)	हजार ली.	169.820
5	संतुलित पशु आहार का वितरण	मैट्रीक टन	8438
6	कार्यरत चल व अचल पशु चिकित्सालय	संख्या	1
7	पशु चिकित्सा के अन्तर्गत कार्यरत सह0 समिति	संख्या	1147
8	पशु संख्या जिनका इलाज किया	संख्या	0
9	कृत्रिम गर्भाधान के अन्तर्गत सह. समिति	संख्या	280
10	पशु संख्या जिनका कृत्रिम गर्भाधान किया	संख्या	39364
11	दुग्ध अवशीतन केन्द्र	संख्या	नहीं
12	दुग्ध बिक्री	हजार ली.	128.14
13	दुग्ध पाउडर उत्पादन	मे0टन	2203
14	घी उत्पादन	मे0टन	1982
15	घी बिक्री	मे0टन	1214
16	दही बिक्री	के0जी0	541832
17	लस्सी बिक्री	लीटर	54332
18	छाछ	लीटर	2193303

जिले की दुग्ध समितियों द्वारा संकलित दूध को अलवर डेयरी संयंत्र पर संकलित किया जाता हैं वर्ष 2017-18 में पंजीकृत दुग्ध सहकारी समितियों की संख्या 1147 है। कुल 1147 कार्यशील दुग्ध समितियां एवं संकलन केन्द्रों से प्रतिदिन औसत 169822 लीटर दुग्ध संकलन किया गया है।

दुग्ध समितियों को ऑटोमाईजेशन के तहत अब तक ए एम सी एस एवं एम एम सी यू 24, ई एम टी 26 लेक्टोस्केन 42 वितरित किये जा चुके हैं। जिनसे दुग्ध की गुणवत्ता की जॉच होती है तथा दूध की तोल कम्प्यूटर द्वारा होती है। जिले की 44 दुग्ध समितियों पर बी एम सी लगाई जा चुकी है, जिसमें आस-पास की कई दुग्ध समितियों का दुग्ध एक ही समिति पर एकत्रित कर ठण्डा किया जाकर अलवर डेयरी संयंत्र पर भेजा जाता है। वर्ष 2017-18 में सदस्य पशुपालकों की संख्या 92812 है। जिसमें से अनुसूचित जाति के 9440 व अनुसूचित जन जाति के 14959 ओ बी सी के 23270 व अन्य 45143 जिले में पशुपालक सदस्य है। जिसमें से 35812 महिला पशुपालक सदस्य है। संकलित दुग्ध की मात्रा इस वर्ष 619.851 लाख किलो जिसका औसत 169.822 किलो प्रतिदिन है। वर्ष 2017-18 में पशुपालकों को कुल 21976 लाख: पशुपालकों को दूध का भुगतान किया गया। जोकि विभिन्न समितियों द्वारा लाभ अर्जित कर अपने सदस्यों को भी वितरित किया गया है। डेयरी द्वारा पशुपालकों को हरे चारे के बीज, संतुलित पशु आहार, सरस एम.एम., यू.एम.बी., सांभर साल्ट इत्यादि भी उचित कीमत पर उपलब्ध कराये जाते है। अलवर दुग्ध संघ द्वारा सामाजिक सरोकार में पशुपालकों के स्वास्थ्य के हितों के लिए आरोग्य बीमा के अन्तर्गत 2277 पशुपालकों का चिकित्सा बीमा कराया गया एवं प्रधानमंत्री जीवन ज्योति बीमा योजना के तहत 7463 पशुपालकों का बीमा कराया गया जिसके अन्तर्गत बीमित की प्राकृतिक मृत्यु एवं दुर्घटना व दुर्घटना मृत्यु पर आश्रित को बीमा राशि का भुगतान किया जाता है। सरस सुरक्षा कवच 13 व 14 दस के अन्तर्गत 73 सदस्यों को कुल क्लेम राशि 24.10/-लाख रुपये वितरित की गई तथा जननी सुरक्षा योजना के अन्तर्गत वर्ष में 803 महिलाओं को लगभग: 1800725/- का सरस घी वितरित किया गया।

दुग्ध उत्पादनवर्द्धन कार्यक्रम के तहत कृत्रिम गर्भाधान की सुविधा सुलभ है। एकल कृत्रिम गर्भाधान केन्द्र 26 एवम कलस्टर केन्द्र 50 है। जिसमें समितियों की संख्या 276 है। वर्ष 2017-18 में 39384 पशुओं में कृत्रिम गर्भाधान किया गया। वर्ष 2017-2018 में अलवर संघ द्वारा आर.बी.पी. (राशन बैलेन्सिग प्रोग्राम) के अन्तर्गत पशुओं को दिये जाने वाले चारे की बैलेसिंग की गई। इसकी ट्रेनिंग भी अलवर संघ द्वारा की गई। वर्ष 2017-18 में अलवर संघ द्वारा प्रधानमंत्री जीवन ज्योति बीमा योजना एवं सरस सुरक्षा कवच योजनाओं के तहत 8901 पशु पालक सदस्यों को लाभान्वित किया गया है।

संघ की लगभग समस्त दुग्ध समितियों में उचित मूल्य पर सन्तुलित पशुआहार 8814 मैट्रिक टन वितरित किया गया । सरस मिनरल मिक्सचर 3.070 मैट्रिक टन बिक्री किया गया । वर्ष 2017-2018 में डेयरी संयंत्र में 1970

मैट्रिक टन घी एवं 2203 मैट्रिक टन दुग्ध पाउडर का उत्पादन किया गया। इसके अलावा वर्ष 2017-18 में पाश्चुरीकृत गुणवत्ता युक्त सरस दूध 467.716 लाख लीटर दूध अलवर शहर तथा जिले के विभिन्न कस्बों तथा राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र के उपभोक्ताओं को विक्रय किया गया। इसके अतिरिक्त 1214 मैट्रिक टन घी, एवं 101.300 मैट्रिक टन पनीर उपभोक्ताओं को विक्रय किया गया। इसके अलावा छाछ, लस्सी, श्रीखण्ड, दही ,पनीर आदि दुग्ध पदार्थ उत्पादन कर उपभोक्ताओं को सुलभ कराये जाते है।

निष्कर्ष:

अलवर ज़िले में पशुपालन एवं डेयरी विकास के भौगोलिक अध्ययन से यह निष्कर्ष प्राप्त होता है कि जिले के सामाजिक एवं आर्थिक विकास में पशुधन एवं दुग्ध व्यवसाय की महत्वपूर्ण भूमिका है। ग्रामीण क्षेत्रों में घरेलू आजीविका की पूर्ति पशुपालन एवं दुग्ध व्यवसाय से हो रही है। सरस डेयरी एवं सहकारी डेयरी विकास निगम लिमिटेड विभिन्न दुग्ध उत्पादों के माध्यम से लोगों को रोजगार के अवसर प्रदान कर रहा है अतः हम कह सकते है कि अलवर जिले के विकास में पशुधन एवम डेयरी विकास से महत्वपूर्ण प्रगति हुई है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची:

1. राजस्थान का भूगोल, प्रोफेसर एच एस शर्मा, पंचशील प्रकाशन, जयपुर
2. जिला कलेक्टर कार्यालय, वार्षिक प्रतिवेदन रिपोर्ट 2017-18
3. पशुपालन विभाग, जिला अलवर, राजस्थान
4. पशु चिकित्सालय, जिला अलवर
5. जिला सहकारी दुग्ध उत्पादन समिति, अलवर
6. सरस डेयरी उद्योग केंद्र, जिला अलवर
7. अलवर जिला दुग्ध उत्पादक सहकारी संघ लिमिटेड

Corresponding Author

Nikita Gupta*

Research Scholar, Raj Rishi Bhartrihari Matsya University, Alwar, Rajasthan